सूर्य पुराण



प्रकाशक—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,

राजादरवाजा, कचौड़ीगली,

वाराणसी। मूल्य ।)

॥ श्रीः ॥

सूर्य पुराण

दो०-वन्दि कञ्जपद जोरिकर, श्रीपतिगौरि गणेश।
तुलसिदास कहते सुयश, बरणौं कथा दिनेश॥
वन्दौं चरण हृदय धरि, प्रेमभक्ति मनलाय।
महिमा अगम अपार है, साहब ज्ञान सहाय॥

सूर्य देवता सुमिरौं तोहीं।
सुमिरत ज्ञान बुद्धि दा माहीं॥
ज्योति स्वरूप भानु बलवाना।
तेज प्रताप है अग्नि समाना॥
तुम आदित परमेश्वर स्वामी।
अलख निरञ्जन अन्तर्यामी॥
बरनि न जाई ज्योति कर लीला।
धर्म धुरन्धर परम सुशीला॥
ज्योति कला चहुँ ओर विराजै।
जगमग कानन कुण्डल साजै॥

नील बरण वर हय असवारी ।
ज्ञान निधान धर्म व्रतधारी ॥
तासु कथा मैं कहौं बखानी ।
पुरुषोत्तम आनँदघन ज्ञानी ॥
आदित महिमा अगम अपारा ।
तीन भुवन जेहि छबि उजियारा ॥

दोहा—आदितकथा पुनीत अति, गावहिं शंभु सुजान ।
तीनलोक छबि ज्योतिसम, करौं प्रताप बखान ॥

सुनहु उमा आदित परतापा ।
बरणौं बिमल सूर्य कर जापा ॥
नाथ महातम सुनहु भवानी ।
कहौं पुनीत कथा शुभ बानी ॥
बाँझ सुनै एक मास पुराना ।
मन क्रम बचन धरे व्रत ध्याना ॥
द्वादश वर्ष करै अवतारा ।
नेम धर्म एक मधुर अहारा ॥

कुशा बिछाइ करे विश्रामा।
हर्षित जपै सूर्य कर नामा॥
आदित वासर जबहीं आवै।
सुनै पुराण अरु विप्र जिमावै॥
इतना टेक धरे तिय जबहीं।
होहिं दयाल दयानिधि तबहीं॥
होहिं पाँच सुत अग्नि समाना।
धर्म धुरन्धर ज्ञान निधाना॥
तिनसों जीति सकै नहि कोई।
विद्यावान सुलक्षण होई॥

दोहा–बाँझ कथा मन लाइके, टेक धरे मत ध्यान।
निश्चय उपजे पाँच सुत, जोधा अग्नि समान॥

इतिश्रीमा.सूर्यसहा.वन्ध्यास्त्रीवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः

कथा कहौं रवि अमृत बानी।
मन स्थिर कर सुनहु भवानी॥
कुष्ट बरण हो जाके अङ्गा।

सुनै मनुज सो भानु प्रसङ्गा ॥
रवि दिन भोजन करै अलोना ।
पुष्प सुवास चढ़ावै दोना ॥
विप्र बोलि रवि होम करावै ।
सोइ भस्म लै अङ्ग लगावै ॥
निश्चय कुष्ठ वरन क्षय जाई ।
धन महिमा है सूर्य गोसाईं ॥

दोहा—जाके कुष्ट शरीरमें, सो नित सुनै पुरान ।
निश्चय सूर्य प्रताप से, पावै काया दान ॥

इतिश्रीमहा.सूर्यप्र.कुष्टक्षीवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः२

सूर्य कथा मैं कहौं बखानी ।
मन स्वतन्त्र होई सुनहु भवानी ॥
जाके वरण अङ्ग महँ होई ।
सूरज कथा पाठ कर सोई ॥
करै पाँच व्रत नर अवतारा ।
नेम धर्म एक मधुर अहारा ॥

चन्दन अगर लेप तन करई ।
निशि दिन ध्यान सूर्य पर धरई ॥
निश्चय अङ्ग बरन मिटि जाई ।
धनि महिमा है सूर्य गोसाईं ॥
भानु चरित्र सुनै मनलाई ।
निश्चय कुष्ठ बरन क्षय जाई ॥

दोहा-जाके उपजे कुष्ट तन, सो नित सुने पुरान ।
धन महिमा आदित्य की, करौं प्रताप बखान ॥

सूर्य कथा मैं कहौं बुझाई ॥
मन क्रम बचन सुनो चितलाई ॥
जो नर होइ अन्धयुग लोचन ।
सो यह कथा सुनै दुख मोचन ॥
करै स्नान बिन एक अहारा ।
विविध भाँति करि नेम अचारा ॥
पीपर तरु तर सुनै पुराना ।
पावै लोचन अन्ध सुजाना ॥

अन्धा लोचन निश्चय पावै ।
जो यह कथा सुचित मनभावै ॥

दोहा-अन्ध लहैं निश्चय नयन, जो जाने प्रभु एक ।
पुलकित परम पुनीत यह, धरे कथा पर टेक ॥

इतिश्रीमहा० अधलोचन प्राप्तोनाम तृतीयो ऽध्यायः ३

यात्रा जो नर करै विदेशा ।
सो नित सुनै पुरान सुरेशा ॥
निश्चय तासु सकल शुभ होई ।
लाभ भवन चलि आवै सोई ॥
जो चिन्तित रहे ऋण अधिकारी ।
सो यह कथा करे अनुसारी ॥
निश्चय ऋणहु सकल मिटजाई ।
धनि महिमा है सूर्य गोसाईं ॥

दोहा-यात्रा को नर जब चले, तब यह सुने पुरान ।
निश्चय मनवाँछित सफल, पुरवहिं श्रीभगवान ॥

इतिश्रीमहासूर्यमहा.मनवाँछितदातानामचतुर्थोऽध्यायः

ऐसो महिमा आदित देवा।
करहिं जासु सुर नर मुनिसेवा ॥
मिटे गाढ़ निश्चय मन तासू।
पुलक प्रेम मन हरष हुलासू ॥
दीना नाथ निरंजन साईं।
महिमा जाकर बरनि न जाई ॥
सूर्य कथा मैं कहौं बखानी।
मन स्थिर करि सुनहु भवानी ॥
करै दण्डवत अरु व्रत ध्याना।
सो तनु ले यहि कथा समाना ॥
तेज प्रताप बरनि नहि जाई।
सूर्य चरित्र सुनहु मन लाई ॥
कहौ सुभग यह कथा पुनीता।
रवि प्रताप मैं भयो अजीता ॥

दोहा—जो महिमा आदित्य की, बरनौं प्रेम उछाह।
सुनहु उमा पुलकित तन, कीरति प्रभु अवगाह ॥

कहौं पुनीत कथा शुभ बानी ।
बहुरि महातम सुनहु भवानी ॥
कार्तिक चैत पुनीत दिन भारी ।
साजहु अरघ सकल नर नारी ॥
चन्दन अगर कपूर की बाती ।
पूजा भक्ति करे बहु भाँती ॥
मनो कामना जो मन राखैं ।
पुलकित होइ भानु गुन भाषैं ॥
तेहि कल्याण करैं भगवानां ।
तेज पुञ्ज प्रभु कृपा निधाना ॥

दोहा—लीला अगम अपार प्रभु, कृपा सिन्धु भगवान ।
बरणौं कथा पुनीत यह, मन अस्थिर करि ध्यान ॥

सुनहु उमा यह चरित अपारा ।
भानु महातम बहु विस्तारा ॥
सिंहलद्वीप नगर इक नाऊँ ।
तहाँ निवास परीचित राऊ ॥

तहाँ पुनीत धर्म वर नारी।
तासु भुवन एक सुता कुमारी॥
सो नित करै भानु की पूजा।
सेवै सूर्य और नहिं दूजा॥
श्रद्धा नेम कथा मन लाई।
करै हर्ष सो शुभ दिन राई॥
तासु भवन प्रभु करैं कलेवा।
तीन लोक नहिं जाने सेवा॥
एक समय अति अचरज भयऊ।
सुरसरि तीर गमन तेहि ठयऊ॥
चीर उतारि भूमि पर धरेऊ।
कन्या पग जल भीतर करेऊ॥
मज्जन करन लाग सो बाला।
हिये विराजत मोती माला॥
तेहि अवसर नारद मुनि आये।
कन्या देखि परम सुख पाये॥

ठाढ़ भये मुनि सुरसरि तीरा ।
लीन्ह उठाय सुताकर चीरा ॥
कन्या जल में करै पुकारी ।
पट दीजे मुनि धर्म विचारी ॥
कह नारद सुनु कन्या बाता ।
मोसन करहु पुरुष कर नाता ॥
सुनु मुनि ज्ञानि भये तुम बौरा ।
ऐसे वचन कहौ जिन औरा ॥
अस बानी कस कहेउ मुनीसा ।
हम सम कन्या लाख पचीसा ॥
बिनती मोर सुनहु मन बानी ।
देव बसन तुम मुनि विज्ञानी ॥
दोहा-नग्ननारि जलमहं खड़ी, कह मुनिसन करजोरि ।
कृपासिन्धु ज्ञाता धरम, अम्बर दीजे मोरि ॥
जब कन्या बहु बिनती लाई ।
तेहि क्षण नारद रहे लजाई ॥

अम्बर दे मुनि भवन सिधाये।
तहँ तबहीं श्री शंकर आये॥
सो सुनि मुनिहिं शाप बस कीन्हा।
सो आदित से कहबे लीन्हा॥
जहँ मैं करत रही असनाना।
अम्बर ले गये मुनि विज्ञाना॥
ताहीं लग शिव तहाँ सिधारे।
गौर बदन सङ्ग गिरिजा धारे॥
शक्ति सहित प्रभु नाये माथा।
हर्षि शम्भु देखे मुनि नाथा॥
कुशल कहा मुनि शिव मुसुकाई।
बैठन कहि सब कथा बुझाई॥
पूछा प्रभु तब शिव कर जोरी।
नाथ सुनहु यह बिनती मोरी॥
कहँ अपराध कीन्ह मुनि भारी।

सो अब मोसन कहहु विचारी ॥
तब प्रभु कहा सुनहु हो भोरा ।
यह कन्या सेवक है मोरा ॥
सुनहु हिये धरिके मुनि ज्ञानी ।
किये कुदृष्टि कुधर्म न जानी ॥
कारण सोई श्राप अस दयऊ ।
तुरतै अङ्ग बरण मुनि लयऊ ॥
इतना कहि मुनि मन मुसुकाना ।
ज्ञान होन तब मुनि पहिचाना ॥
बचन सुनत प्रभु क्रोधित भयऊ ।
कन्या सङ्ग लै मुनि पहँ गयऊ ॥

दोहा—बचन सुनत क्रोधित भये, क्रोध न हिये समाय ।
कौतुक कीन्ह प्रयुक्त तुम, मोसन कहहु बुझाय ॥

जोरि पाणि मुनि बचन सुनाये ।
धरि पद कमल सूर्य गुण गाये ॥
कह मुनि सुनु प्रभु बात हमारी ।

भा मोसन अपराध है भारी ॥
यह अपराध क्षमा प्रभु कीजै ।
दीना नाथ अनुग्रह कीजै ॥
तब प्रभु कहा सुनो मम बानी ।
उतके लोग सकल अज्ञानी ॥
तेहि अपराध लेहु मुनि शापा ।
जस कीन्हेउ तस भोगहु पापा ॥

दोहा–त्रिभुवन स्वामी मोहिं पर, करहु ज्योति परकाश ।
हर्षित गावहिं गुण विमल, कहाँ मोर अघ नास ॥

इतिश्रीमहा.सूर्यम.अपराध,शापोनामपञ्चमोऽध्यायः ॥

पंपापुर एक नगर को नाऊ ।
हलधर विप्र तहाँ एक राऊ ॥
नगर बसै मानों कैलाशा ।
धर्म कथा तहँ होई प्रकाशा ॥
पूजन करै भानु दिन राती ।
निशिदिन टेक धरे बहु भाँती ॥

कोटि अमि चारहुँ दिशि माहीं।
श्री सूर्य को आश्रम ताहीं॥
रतन जड़ित सर तहाँ सुहावा।
कनक घाट चहुँओर बनावा॥
तहाँ खम्ब एक परम विशाला।
शत योजन सो उच्च रसाला॥
तेहि खम्भा आदित कर बासा।
जात खम्भ सो लाग अकासा॥
योजन लच्च सो उदय कराहीं।
योजन सहस्र एक पल जाहीं॥
भात होत उदयाचल वासा।
अस्ताचल पर करहिं निवासा॥
यहिविधि आदित आवहिं जाहीं।
समुझ पुनीत कथा मन माहीं।
आदित कथा सुनहु मन लाई

मैं तोहि अर्थ कहौं समुझाई ॥

दोहा—धन्य भानुईश्वर प्रभु, महिमा अगम अपार।
तीन लोक छवि ज्योति सम, है जाकर उजियार ॥
कुष्ठी ध्यावै भक्ति कर, पावै काया दान।
अन्तरयामी दयानिधि, कृपाकरहिं भगवान ॥
सुरनर मुनि अस्तुति करहिं, हो प्रसन्न भगवान।
जो हित मन व्रत नर करै, श्रद्धा प्रीति समान ॥
सब गुण आगर बुद्धि वर, सुन्दर शील निधान।
मन बच कर्म ते हर्षयुत, जो नर करहिं बखान ॥

इतिश्रीमहा०सूर्यमहा०अस्ताचलवर्णोनामषष्ठोऽध्याय

गिरिजा कह्यो सो कहो गुसाईं।
सो मोहिं अर्थ कहो समुझाई ॥
कहन लगे शिव कथा रसाला।
जेहि विधि ऊगहिं पूर्व कृपाला।
गिरिजा सुनो कथा मन लाई।
मैं तोहिं अर्थ कहौं समुझाई ॥
पूर्व दिशा एक श्री पुर देशा।
तहँ के राजा रूप महेशा ॥

सदा करे आदित की पूजा।
सेवे सूर्य और नहिं दूजा॥
यहि विधि सकल नगर उजियारा।
यहाँ एक है अगम अपारा।
सहस कोस परवत परमाना।
बसै तहाँ आदित बलवाना॥
उगे जाय तहँ करे निवासा।
पुनिपश्चिमदिशिकरहिंप्रकाशा॥
मन बच कर्म कथा बर गाई।
सूर्य चरित विधि तुमहिं सुनाई॥
सुनि गिरिजा सुन्दर यह बानी।
बल प्रताप सुनि मन हरषानी॥
धन्य भानु जिनकी यह लीला।
धर्म धुरन्धर धरम सुशीला॥
जो नर कथा सूर्य की गावै।

चढ़ि विमान बैकुण्ठ सिधावै ॥
सूर्य चरित सुनि अमृत बानी ।
अस्तुति हर्षित करैं भवानी ॥
छंद-हेजगस्वामी अंतरयामीज्योतिकलाछबि उदितमहा ।
गुनतीत निधाना श्रीभगवाना करो कृपा हे धर्ममहा ॥
छबिज्योति विराजै कुण्डलराजै तव प्रताप महिमावरन ।
यच हेतु घनेरा सब प्रभु तेरा चेत नाम पातक हरना ॥
दो० करहु कृपा अब मोहिं पर,अति छवि ज्योतिविराज।
तेज विपुल तिहुँलोक महं, जय जय जय महराज ॥
इतिश्रीमहा०सूर्य०पूर्वदिशिउदयो नाम सप्तमोऽध्यायः७
उत्तर दिशि कहँ उगहिं गोसाईं ।
मैं तोहि अर्थ कहौं समुझाई ॥
उत्तर दिशि एकनगरबिशाला ।
राज करे तहँ मदन गोपाला ॥
तहाँ शैल एक परम बिशाला ।
सत योजन परमान कराला ॥
तापर भानु किरन नहिं जावे ।

इहि विधि पुर अँधियार जनावै ॥
निशा घोर सब पुर अँधियारा ।
उगे न रवि न होइ उँजियारा ॥
तहाँ बास कलियुग कर होई ।
पाप मलेच्छ बसत तहँ सोई ।
यहि कारण तहँ उगे न भानू ।
मैं तोहिं अर्थ कहौं परमानू ॥
एक समय अचरज अति भयऊ ।
नारद मुनि तहवां चलि गयऊ॥
देखा नगर सकल अँधियारा ।
धर्म कथा कर कहुँ न प्रचारा ॥
फिर २ सकल नगर मुनि देखा ।
अघ ब्यौहार अपर नहिं देखा ॥
मन महँ नारद कीन्ह विचारा ।
कहँ आये यहि पुर अँधियारा ॥

अस कहि नारद कोपेउ जबहीं।
दीन्हा श्राप नगर कहँ तबहीं॥
कुष्ठी होउ सकल नर नारी।
धर्म कथा कर नाम बिसारी॥
कुष्ठ बरन भा सबके अङ्गा।
आठो गात कुष्ठ तन भङ्गा॥
रहा न कोऊ कुष्ठ विहीना।
जबहीं श्राप मुनीश्वर दीन्हा॥
व्याकुल भये सकल नरनारी।
त्राहि त्राहि बस करहि पुकारी॥
श्राप देइ उत्तर कहँ आये।
अब हम यह मुनि चरित सुनाये॥
अब कहहू मुनि पूछौं तोही।
उग्र श्राप कब छूटे ओही॥
अङ्ग बरन मुनि देखा कैसा।

हंस समान श्वेत भा जैसा।
भिक्षा होइ मुनि घर कहँ आये
हरषित होइ भानु गुण गाये।
धनि आदित काया के राजा
ज्योति जासु तिहुँ लोक विराजा।
अस्तुति रविकर नारद गाये
कोटि विप्र तहँ नेवत पठाये।
भोजन सुधा समान बनाय
प्रेम सहित सब विप्र जंवाये।
अश्वमेध मुनि करन सो लागे
तीन लोक के दारिद भागे
सब कहँ नारद नेवत पठाये।
निज २ वाहन चढ़ि २ आये
ब्रह्मा विष्णु और त्रिपुरारी।
आये सबै सहित सुत नारी

बहु प्रकार मुनि सबहिं जेंवाये।
हरषित होय भानु गुण गाये॥
वेद पढ़े मुनि गिरा सुधारी।
हरषित गावहिं मङ्गल नारी
चंदन अक्षत लै पकवाना।
पूजा करहिं मुनी धरि ध्याना॥
ब्रह्मादिक निज लोक सिधाये।
प्रेम पुलक सूरज गुन गाये॥

दोहा—यज्ञ कीन्ह मुनिवर सुविधि, शोभा बरनि न जाय।
देव कोटि तेंतीस तहँ, हरषि भानु गुणगाय॥

इतिश्रीमहा०सूर्यमहा०नारदयशवर्णनोनामअष्टमोऽध्याय

जो नर धरें सूर्य पर ध्याना।
ताकर होई पुत्र कल्याना॥
जो रवि कथा सुनै मन लाई।
तापर दिनकर होहिं सहाई॥
धर्म प्रताप आदित बलवाना।

तेज प्रताप है अग्नि समाना ॥
दोह–पूछत गिरिजा शंभुसन, भानु चरित मन लाय।
दक्षिण दिशा पुनीत है, नाथ कहौ समुझाय ॥
हे गिरिजा सुन शैल कुमारी।
कहिहौं भानु चरित विस्तारी ॥
कहन लगे शिव कथा रसाला।
जेहि विधि दक्षिणउगहिंकृपाला॥
वर्णन करहिं अर्थ समझाई।
सुनहु सत्य गिरिजा मन लाई ॥
दक्षिण दिशि एक नगर अनूपा।
जयमल विप्र तहाँ कर भूपा ॥
हर्षित भजन करै दिन राती।
तहाँ करे प्रभु सुख बहु भाँती ॥
यहि विधि प्रभुकर ज्योतिविराजे।
अनहद नाद घंट धुनि बाजै ॥

तैंतिस कोटि देवता जहँवाँ।
श्री सूर्य के आश्रम तहवाँ।
दक्षिण दिशि काशी, परियागा।
तहँ के लोग सकल बड़ भागा॥
दोउ बलभद्र सहोदरे संगा।
तहाँ बसे सरिता वर गंगा॥
कृपासिंधु प्रभु परम अगाधा।
निशदिन सुमिरत नाथ अबाधा॥

दोहा–दक्षिण दिशा पुनीत है, सुनहु उमा मनलाय।
अर्थ सुभग जैसे अहै, तैसे कहौं बुझाय॥

कलि व्यापित जबहीं होई जैहैं।
मानुष को मानुष धरि खैहैं॥
तब दक्षिण दिशि उदय कराहीं।
आगिल अर्थ कहौं तुम पाहीं॥
धर्म कथा होइहैं दिन राती।

नेम धर्म करिहैं बहु भांती ॥
विप्र जेंवाय के होम करावे ।
वाहि भस्म ले अंग लगावे ॥
विप्र जेंवाय आप तब खैहैं ।
निशिदिन कथा सूर्य की गैहैं ॥
यहि प्रति कमला करहिं निवासा ।
धर्म कथा कर होई प्रकासा ॥
मिथ्या वचन कोऊ ना भाषे ।
धर्म विचार भानु तप राखे ॥

दोहा—द्वादश कला उगाहिं तब, आदि अन्त तब जाय ॥
पूर्व जन्मके सकल अघ, कहत सुनत क्षयजाय ।

इतिश्रीसहा०सूर्यप०कलिवर्णनोनामनवमोऽध्यायः॥९॥

बोली तबहिं उमा हरषाई ।
दया करहु कछु कहौ गुसाई ॥
जेहि सेवा करि नर सुख पावै ।
जाहि भजे शुभ गति नर पावै॥

रवि महिमा अति अगम अपारा ।
कहिये नाथ कथा विस्तारा ॥
जाको भक्ति मिले सब धानी ।
सो प्रसङ्ग सब कहहु बखानी ॥
अति उत्तम यश रवि अवगाहा ।
सो प्रभु बरनो सहित उछाहा ॥
कस स्वरूप किमि रूपहिं करहीं ।
किमिशीतल किमि तेजहिं धरहीं ॥
यह प्रति मास नर उदै गोसाईं ।
किमि व्रत करि नर मोचहिं पाईं ॥
सोइ सत्य सब कहो विचारी ।
जेहि सुनि होय ज्ञान अधिकारी ॥
अस कहि शिवपद वन्दन कीन्हा ।
हर्षि शम्भु हरि सुमिरन कीन्हा ॥

दोहा—धन्यधन्य गिरजा सुनहु, पूछहु जग हितलाग ।
रवि चरित्र पावन परम, सुनहु सहित अनुराग ॥

रविमण्डल कर सुनु विस्तारा ।
जेहि विधि तन स्थूल अपारा ॥
द्वादस सहस योजन चहुँफेरा ।
रवि मण्डल जानहु शुभ डेरा ॥
अति उत्तम जग तेज अपारा ।
गये समीप न होय उबारा ॥
दस सहस्र रवि नयन गिनाये ।
अति विशाल कहि देवन गाये ॥
उदय होत त्रिभुवन तम भागे ।
तासन हम नित नित वरमाँगे ॥
पार ब्रह्म साँचो तेहि जाने ।
सुमिरत हिये ध्यान उर आने ॥
उदय होत विधि रूपहिं जानो ।
मध्य विष्णु का रूप बखानो ॥
सन्ध्या रूप रुद्र गति केरो ।

तीन काल तव मूरति टेरी ॥
यह अनुमान सदा पद बन्दिये ।
निश्चय करि विश्वास अनन्दिये ॥
पावहिं गति ते नर बड़ भागी ।
जाके कमल चरण लौ लागी ॥

दोहा–यहि विधि जानेउ हे उमा, रविपूजा जेहहेतु ।
सिद्धि तासु मन कामना, चारि पदारथ देतु ॥

और सुनहु प्रभु की प्रभुताई ।
सूर्य कथा सब देवन गाई ॥
द्वादश तन धरि वेद बखाने ।
द्वादश कथा उद्योग बिधाने ॥
द्वादश मास के द्वादश नामा ।
उदय करे रवि जग सुखधामा ॥
माघ मास मासन महँ नीका ।
कह श्रुति सब मासन के टीका ॥
मकर उदय कहि बरुन सुनामा ।

भक्ती ज्ञान ध्यान कर जामा ॥
चैत्र मीन रवि उदय कराहीं ।
नाम देव जग जाते ताहीं ॥
मेष वैशाख भानु जब होई ।
उग्र नाम रवि करिहैं सोई ॥
दोहा-इन्दु नाम मत ज्येष्ठ तप, सब प्रकार सुखदेहिं ।
रवि अषाढ़ तपकर मिथुन, जासु नाम जपवेहिं ॥
सावन करक नाम रवि केरा ।
भादों सिंह भवन का फेरा ॥
आश्विन कन्या राशि विराजै ।
सुरनर नित्य नाम शुभ छाजै ॥
कार्तिक तुला दिवाकर नामा ।
उदय करहिं रविजग सुखधामा ॥
मार्गशीर्ष वृश्चिकहिं सुहाई ।
मित्र नाम सब जग सुखदाई ॥
पूष मास धन राशि मनाये ।

विष्णु सनातन नाम कहाये ॥
यहि विधि द्वादश मास के माहीं ।
मास मास प्रीति उदय कराहीं ॥
औरो वेद कहै अस बानी ।
मास मास प्रति उदय भवानी ॥
दोहा–सुनोउमा यह सकल व्रत, दिनकर याहि विधान ।
जाहि करे शुभ गति मिले, गावैं वेद पुरान ॥
इतिश्रीमहा०सूर्यम.सूर्यनामवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १०
मन अस्थिर सुनु शैल कुमारी ।
व्रतहि विधान कहौं विस्तारी ॥
शनीवार लघु भोजन कीजे ।
आदित वार धरम बहु कीजे ॥
दन्त काष्ठ पहिले कर लीजै ।
तब स्नानहिं चित्तहिं दीजै ॥
उदय होत रवि अंजुलि देई ।
सात प्रदक्षिण करिये सोई ॥

तब धोती अरु लाल उपरना।
होम करे पढ़ि मंत्र सपरना॥
बन्दि दण्डवत रवि कहँ करई।
दृढ़ विश्वास चित्त महँ धरई॥
अगहन ते यह व्रतहिं बखानो।
ताकर विधि अवश्य करि जानो॥
अगहन में तुलसी दल खाइहत।
व्रतहीं करे सूक्ष्म ते पण्डित॥
पूष मास गो घृत पल तीना।
अति पुनीत कामा कर दीना॥
दोहा–माघ मास व्रत जो करे, मुष्ठि तीन तिल खाय।
व्रत विधान जो करहिं नर, रविलोकन को जाय॥
फागुन मास बरत सुखदाई।
क्षीर तीन पल भोजन खाई॥
चैत मास कर सुनहु विधाना।

दही तीन पल अधिक न आना ॥
वैशाख गोघृत गोबर आना ।
तीन पलते अधिक न माना ॥
ज्येष्ठ मास कर याहि विधाना ।
तीन अंजुली करै जल पाना ॥
मास अषाढ़ बरत कष्ट धरई ।
तीन मरिच औलम्बन करई ॥
सावन मास बरत रवि नीका ।
खांड़ तीन पल है सबहीका ॥
भादों मास अमित सुखदाई ।
त्रै अञ्जुलि गोमूत्रहिं खाई ॥
आश्विन मास बरत शुभ जाने ।
फल केदली के तीन बखाने ॥
कार्तिक मास बरत जो करई ।

तै फल हृदय आनके वरई ॥

दोहा—यहिविधि बारह मासलगि, व्रतविधान कैलीन ।
रवि पूजा विधिवत करैं, मुनि दुर्लभ सो दीन ॥
तुम सन सुनत विचार नित, कह्योसों प्रगटे आई
अब जो कुछ कहिये उमा, सो बरनो हरषाइ ॥

इतिसू०म०पु०सूर्यव्रतवर्णनो नामएकादशोऽध्यायः ११

सो सुनि उमा हर्ष अति भई ।
माया मोह व्यथा सब गई ॥
धन्य धन्य सुन शंकर स्वामी ।
कथा कहो निज हरषित गामी ॥
जे कर्ता रवि पूजत लोगा ।
करहिं अनंद मिटहिं सब रोगा ॥
कथा और पुनि कहौ गोसाईं ।
सो तुम और कछु करो सहाई ॥

इतिसू०महापुराणे सूर्यमाहात्म्ये उमामहेश्वर सम्वादे सूर्यकथावर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

हमारे यहाँ की प्रकाशित पुस्तकें—

श्रीमद्भागवत भाषा टीका बारहो स्कन्ध सम्पूर्ण पाँचो	३०)
टीकाकार पं० दौलतराम गौड)	
महाभारत भा. टी. सबलसिंह १८ पर्व	१५)
निर्णय सिन्धु मूल	८)
सुखसागर भाषा बड़ा	८)
सचित्र सामुद्रिक रहस्य बड़ा	४)
माघमास माहात्म्य भाषा टीका	२॥)
शिवपुराण भाषा बड़ा	१२)
विश्राम सागर	७)
भागवत दशम स्कन्ध भाषा टीका	१२)
प्रेतमञ्जरी भाषा टीका सहित	१॥)

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुक्सेलर,

राजादरवाजा, कचौड़ीगली, वाराणसी।